सम्पूर्णता वर्ष

बेहद का वैराग्य – 2

08.07.2014

1. **स्वमान** – मैं बाप समान निमित्त, निर्मान, त्यागी और वैरागी हूँ।

- ब्रह्मा बाबा बेहद के वैराग्य वृत्ति के आधार से ही पास विद ऑनर हुए। हम भी प्यारे बाबा को फॉलो करते हुए खुद को चेक करें कि मैं - **अ**. स्वयं के देह व पदार्थों से, **ब**. लौकिक संबंधों से, **स**. साधन-सुविधाओं से **द**. और अपने पुराने स्वभाव-संस्कारों से कहाँ तक वैरागी बना हूँ... ?

2. **योगाभ्यास** –

अ. ब्रह्मा बाबा के अखण्ड वैराग्यपूर्ण जीवन को अपने सामने लायें...बाबा का तन सदा शिव बाबा को समर्पित था...बाबा का मन सदा मनमनाभव था...बाबा का धन यज्ञ अर्थ था...संकल्प मात्र भी मेरापन नहीं...कितना साधारण वस्त्र...कितनी छोटी सी झोपड़ी...संसार से सम्पूर्ण विरक्त...एक की याद में मस्त...मैं कहाँ तक उनके समान संसार से अनासक्त और उपराम बना हूँ... ? चेक करें और चेंज करें।
ब. मैं निमित्त करनहार हूँ...करावनहार बाबा हैं...यह स्मृति अनासक्त, लाइट और डिटैच बना देती है...इसलिये इसका गहराई से अभ्यास करें...।
स. सारे दिन में 5 बार साक्षी दृष्टा बन स्वयं व सभी की भूमिका (रोल) को देखने का अभ्यास करें...।

3. **धारणा – सम्पूर्ण वैरागी**

- `जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में, सबमें बेहद के वैरागी तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा।`
- `अभी समय प्रमाण बेहद के वैराग्य वृत्ति को इमर्ज करो। **बेहद के वैरागी अर्थात् अनहद स्मृति स्वरुप**। अपनापन पूरी तरह मिट जाए और उसकी जगह **बाबापन** आ जाए।` **– बाबा**

4. **चिंतन** –

- बेहद के वैराग्य का अर्थ क्या है और वर्तमान समय इसकी आवश्यकता क्यों है ?
- बेदद के वैराग्य व लौकिक-अलौकिक कर्त्तव्यों का बैलेन्स कैसे रखें ?
- बेहद के वैराग्य पर कम से कम एक सुंदर `वैराग्य-बिंदु` प्रतिदिन अपनी डायरी में लिखें ?

5. **तपस्वियों प्रति** – प्रिय तपस्वियों ! वैराग्य साधना का बीज है। वैराग्य ही त्याग, तपस्या और निःस्वार्थ सेवा की जननी है। वैराग्य हमें बाबा के समान सम्पूर्ण बनाने की की (चाबी) है। अतः अब हम ब्रह्मा बाप समान बेहद का वैराग्य धारण कर समय को समीप लायें और बाबा को संसार में प्रत्यक्ष करें।